सांस्कृतिक स्त्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र
नई दिल्ली

संक्षिप्त नोट
'प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में विद्यालयों की भूमिका' पर कार्यशाला

सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र (सीसीआरटी) सेवारत अध्यापकों हेतु 'प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में विद्यालयों की भूमिका' विषय पर कार्यशालाएँ आयोजित करता है, जो कि भिन्न-भिन्न भागों के अध्यापकों को अपनी संस्कृति के आदान-प्रदान का अवसर प्रदान करती हैं, ताकि प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर की विविधता और समृद्धि के प्रति वे सराहना की भावना उत्पन्न कर सकें।

इन कार्यशालाओं का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना तथा छात्र एवं अध्यापकों को ऐसी गतिविधियाँ सुझाना है जो उन्हें देश की सेवा करने में मदद करें। इन कार्यशालाओं में शिक्षक/शिक्षिकाएँ स्थल के सांस्कृतिक परिवेश एवं जैव विविधता विषयक मूल्यों से परिचित होते हैं। इनके संरक्षण के महत्व तथा चुनौतियों के बारे में जानकारी दी जाती है। इन कार्यशालाओं के दौरान प्रतिभागियों में कार्यान्वयन की ऐसी क्रियात्मक योजना विकसित की जाती है जो छात्रों को एक जिम्मेदार नागरिक बनने और भारत की प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर की सराहना व वातावरण की सुरक्षा करने हेतु प्रेरित करती है।

हमारे देश में तीव्र गति से विकास के कारण भौतिक वातावरण तथा सांस्कृतिक ढाँचे में बड़े पैमाने पर अभूतपूर्व परिवर्तन हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप, परिचित परिवेश और इससे संबंधित सांस्कृतिक पहचान खो रहे हैं। अत: इस वास्तविकता को जानना चाहिए कि हमने अज्ञान, जागरूकता की कमी एवं अनियोजित योजनाओं से जो कुछ खोया, उसकी पुन: प्राप्ति असंभव है, चाहे यह किसी पौधे की प्रजाति या ऐतिहासिक स्मारक ही हो ।

कार्यशालाओं में अध्यापकों को इसलिए आमंत्रित किया जाता है, जिससे विद्यार्थी देश को समृद्ध प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक संसाधनों के संरक्षक के रूप में अपनी भूमिका की अनुभूति कर सकें।

कार्यशाला की अवधि लगभग 09 कार्य दिवसों की है।

उद्देश्य :

- प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण में विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन करना।
- संरक्षण की ऐसी सरल तकनीकों का अध्ययन करना, जिनके द्वारा छात्रों/छात्राओं को उनके क्षेत्र में अवस्थित ऐतिहासिक स्मारकों तथा अन्य प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत की देखभाल में शामिल किया जा सके।
- कार्यान्वयन हेतु ऐसी व्यवहारिक योजना विकसित करना, जिससे छात्र/छात्राएं भारत के प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत का आदर करने के लिए प्रेरित हों एवं एक जिम्मेदार नागरिक बन सके।
- राष्ट्रीय अखण्डता की भावना विकसित करने के उद्देश्य से देश के विभिन्न भागों से आए हुए शिक्षक/शिक्षिकाओं को स्थानीय छात्रों/छात्राओं के साथ रहने/ठहरने तथा विचार करने का सुअवसर प्रदान करना।
- संरक्षण के कानूनों की आधारभूत जानकारी प्रदान करना।

कार्यशाला में व्याख्यान, स्लाइड प्रस्तुतियाँ, संरक्षण गतिविधियाँ, स्मारकों और संग्रहालयों का अध्ययन, समूह चर्चाएँ, आदि शामिल हैं। विद्यालयी शिक्षा में स्थानीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा को बताने के लिए शैक्षिक सहायक सामग्री और खेल, कार्य-पत्रक और गतिविधि-पत्रक की तैयारी पर सत्र रखे जाते हैं।

'व्यवहारिक एवं क्रियाशील' अनुभव के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भारतीय सांस्कृतिक निधि (इन्टैक), राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया जाता है। शिक्षकों को कार्यक्षेत्र में व्यवहारिक अनुभव प्राप्त हो सके इसके लिए कुछ खुदाई कार्यों के दस्तावेजों का प्रस्तुतिकरण किया जाता है।

उक्त कार्यशाला के सफल समापन के बाद भाग लेने वाले शिक्षक के माध्यम से विद्यालय को सांस्कृतिक शैक्षिक किट उपहार में दी जाती है।